प्रस्तावना

''कलीसिया'' अर्थात पृथ्वी पर परमेश्वर का राज्य पवित्र बाइबल का एक मेहराबदार विषय है। इसलिए इस विषय का अध्ययन हमें संसार के उद्धार के लिए परमेश्वर की योजना में ''कलीसिया'' के लिए उसके उद्देश्य को निर्धारित करने के लक्ष्य से होना चाहिए। परन्तु जब तक हम किसी प्रकार की पूर्वधारणा, किसी मनुष्य के प्रति वफ़ादारी और स्वार्थी महत्वाकांक्षाओं से निकलकर शुद्ध मन से यह अध्ययन नहीं करते तब तक हम इस सबसे महत्वपूर्ण अभिलाषा की उम्मीद भी नहीं कर सकते। हमारा दृढ़ निश्चय यह होना चाहिए कि हम अपने ऊपर परमेश्वर के अधिकार के अलावा किसी दूसरे को हस्तक्षेप नहीं करने देंगे। ''कलीसिया'' के लिए उसके अनन्त उद्देश्य पर केवल उसका वचन ही प्रथम, मध्यम और अन्तिम अधिकार होना चाहिए।

इस पुस्तक को लिखने का मेरा अभिप्राय दो दुखद स्थितियों की ओर ध्यान दिलाकर उनकी गहन समझ प्रस्तुत करना है। कई कारणों से ''कलीसिया'' अर्थात चर्च के अर्थ पर बहुत उलझन पाई जाती है। साम्प्रदायिक कलीसियाओं में अंग्रेज़ी शब्द ''the church'' का अर्थ ईंट-पत्थरों से बनी इमारत से लेकर मसीह में विश्वासियों के एक सामाजिक क्लब तक पाया जाता है। बहुत से धार्मिक लोगों को, कलीसिया की पहचान के संकट की कोई चिंता नहीं है, क्योंकि वे ''कलीसिया'' के लिए परमेश्वर के नमूने को पूरा करने के लिए कभी प्राथमिकता नहीं देते। स्पष्टतया उन्होंने ''कलीसिया'' पर कभी उस अर्थ में विचार नहीं किया जिसके लिए यह बनाई गई थी। उनका मसीह से कुछ सम्बन्ध है परन्तु वे कभी बाइबल द्वारा दिए गए नाम ''कलीसिया'' बनने की इच्छा नहीं करते। यह बहुत ही दुखद बात है।

इससे भी अधिक दुखद अहसास यह है कि अपनी आत्मिक यात्रा के आरम्भ में ''कलीसिया'' में प्रवेश करने वाले कुछ लोग थोड़े समय के लिए तो ''कलीसिया'' के रूप में रह रहे थे परन्तु अब उन्हें स्वयं पता नहीं चल पा रहा है कि उनके जीवन संसार में या संसार के अनुसार हैं। पहले वे जानते थे कि वे क्या हैं, परन्तु किसी कारण अब उनकी आंखों से वह दर्शन धूमिल हो चुका है। सचमुच यह बात बहुत ही भयंकर है, क्योंकि जब मसीही लोगों को यह स्पष्ट नहीं है कि वे कौन हैं और उन्हें क्या होना चाहिए, तो कलीसिया के लिए

परमेश्वर की योजना को तो समझा ही नहीं जा सकता है। ''कलीसिया'' के लिए परमेश्वर का नमूना अकस्मात नहीं बन जाता। इसे बनाने के लिए कलीसिया के जानने वालों का जीवन, पवित्र शास्त्र के आधार पर होना आवश्यक है, जिसमें परमेश्वर चाहता है कि उसके लोग ऐसे बनें और क्या करें जिससे वे संसार से निकलकर अपने मसीही होने की गवाही दे सकें।

पुस्तक लिखना एक कठिन कार्य है, जिसके पूरा होने के लिए बहुत से मित्रों की सहृदय सहायता की आवश्यकता पड़ती है। प्रस्तुत पुस्तक का लिखना भी कोई अपवाद नहीं है। मैं विशेष रूप से अपनी पत्नी, सुसन का आभारी हूं जो मेरे हर प्रयास में मेरी विश्वसनीय सहकर्मी रही है और उसके बिना जीवन का मेरा कोई भी सपना साकार नहीं हो सकता; हमारे टाइपिस्ट चैरिल शरैम और प्रूफ़रीडर तथा सलाहकार जिसने सुसन और मुझे प्रेरणा दी; एक सच्चे मसीही मित्र, पैटी बैरट को, जिसने इस पुस्तक को अन्तिम रूप देने से पहले कई जानकारियां एकत्र करने में सहायता की; डॉ. कार्ल जी. मिचल को जो मुझे लगातार उत्साहित करते रहे और इस पुस्तक की भूमिका लिखने के लिए मान गए।

ऐसी हर पुस्तक मनुष्य की ओर से होती है और उसमें मनुष्य की त्रुटियां रहती ही हैं। यद्यपि इस पुस्तक को लिखते समय मैंने हर सम्भव पूर्व धारणा से मुक्त रहना चाहा है इसलिए मुझे विश्वास है कि इस पुस्तक को पढ़ते समय, आप भी पूरी सामर्थ से हर प्रकार की पूर्व धारणा को मन से बाहर रखोगे। आइए हम दोनों, अर्थात लेखक और पाठक, पवित्र शास्त्र में प्रकट किए गए प्रभु के आदर्श तक पहुंचे। हमें चाहिए कि प्रभु की इच्छा और आनन्द को पूरा करने से कम किसी भी बात से संतुष्ट न हों। इस पुस्तक में लिखी गई हर बात को केवल तभी स्वीकार करें यदि वह उसके वचन से मेल खाती हो।

प्रिय स्वर्गीय पिता,

तू ने हमें छुड़ाने और कलीसिया को खरीदने के लिए अपना पुत्र दे दिया। हमारे मनों को शुद्ध कर ताकि हम जीवन में केवल एक ही तेरे पवित्र उद्देश्य के अनुसार कलीसिया बनकर यीशु में जीवन बिताने की केवल एक ही चेष्टा करें। हमारे स्वार्थी होने और मन में पूर्व धारणा रखने को क्षमा कर। हमें किसी भी ऐसी बात से निकलने का साहस दे जो हमारे रास्ते में रुकावट बनती है और हमें अपनी सम्पत्ति बनने वाले लोग बनने से रोक। संसार के लोगों की तरह रहने तथा उनके जैसे विचारों से हमें आत्मसंतुष्ट न होने दें। हमारे दर्शन को स्पष्ट कर दे ताकि हम तेरी योजना और तेरे निर्देशन को स्पष्ट रूप से जान सकें। हम तुझे, तेरे प्रिय पुत्र और धन्य पवित्र आत्मा को मसीह की कलीसिया बनकर महिमा दें।

मसीह यीशु के नाम से, आमीन।

''हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो, जिसने यीशु मसीह के मरे हुओं में से जी उठने के द्वारा, अपनी बड़ी दया से हमें जीवित आशा के लिए नया जन्म दिया'' (1 पतरस 1:3)।

ऍंडी क्लोर